उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 7

भविष्यवाणियों का उद्देश्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1

ईश्वरीय सर्वोच्चता....1

परमेश्वर का अपरिवर्तित होना....2

परमेश्वर का चरित्र....2

वाचायी प्रतिज्ञाएं....2

अनन्त सम्मति....2

परमेश्वर का विधान....3

भविष्यवाणियां और मानवीय संभावनाएं....4

सामान्य प्रारूप....5

अवलोकन....5

स्पष्टीकरण....5

व्याख्या....6

विशेष उदाहरण....6

शमायाह की भविष्यवाणी....7

योना की भविष्यवाणी....8

भविष्यवाणियों की निश्चितता....9

सशर्त भविष्यवाणियां....9

अनाधिकृत भविष्यवाणियां....10

अभिपुष्ट भविष्यवाणियां....11

शब्द....11

चिन्ह....11

शपथबद्ध भविष्यवाणियां....12

भविष्यवाणी के लक्ष्य....14

प्रचलित दृष्टिकोण....14

सही दृष्टिकोण....15

"क्या जाने?" प्रतिक्रिया....15

द्विरूपीय प्रतिक्रिया....17

उपसंहार....17

उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय सात

भविष्यवाणियों का उद्देश्य

परिचय

जो भी पुराने नियम की भविष्यवाणी को पढ़ता है उसे शीघ्र ही पता चलता है कि भविष्यवक्ताओं ने बहुत भविष्यवाणियां की हैं, और यदि आप अधिकांश लोगों से पूछें कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में इतनी भविष्यवाणियां क्यों पाई जाती हैं, तो वे आपको सामान्य रूप में बताएंगे- हमें भविष्य के बारे में बताने के लिए। हम इस अध्याय में सीखेंगे कि भविष्यवक्ताओं ने केवल भविष्य के बारे में बताने के लिए ही भविष्यवाणियां नहीं की थी, बल्कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों को भविष्य बनाने के लिए उत्सहित करने हेतु भविष्यवाणियां की थीं।

हमने इस अध्याय का शीर्षक रखा है, "भविष्यवाणियों का उद्देश्य" क्योंकि हम यह खोजने जा रहे हैं कि भविष्यवक्ताओं ने भविष्य के बारे में क्यों बोला था। भविष्यवाणियों के उद्देश्य को खोजने के लिए हम चार भिन्न-भिन्न शीर्षकों का अवलोकन करेंगे: पहला, भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार इतिहास के ऊपर ईश्वरीय सर्वोच्चता को समझा? दूसरा, भविष्यवक्ताओं की अपनी भविष्यवाणियों और मानवीय संभावनाओं के विषय में क्या धारणाएं थीं? तीसरा, भविष्यवक्ताओं ने अपनी भविष्यवाणियों की निश्चितता को किस प्रकार समझा? और चौथा, पुराने नियम की भविष्यवाणी में भविष्यवाणियों का लक्ष्य क्या था? आइए, पहले देखें कि इतिहास पर परमेश्वर की सर्वोच्चता ने भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों के विषय में उनकी समझ को किस प्रकार ढाला।

ईश्वरीय सर्वोच्चता

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि सब लोगों के समान मसीही भी चरमसीमाओं की ओर चले जाते हैं? या तो हम बहुत अधिक खाते हैं या बिल्कुल नहीं खाते, हम बहुत अधिक व्यायाम करते हैं या बिल्कुल नहीं करते। धर्मविज्ञान में भी ऐसा ही होता है। बहुत बार जब हम धर्मविज्ञानी धारणाओं के बारे में सोचते हैं तो हम चरमसीमाओं की ओर चले जाते हैं, और परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में ऐसा विशेषकर होता है। हम कुछ मसीहियों को पाते हैं जो इतिहास पर परमेश्वर की सर्वोच्चता पर इस हद तक बल देते हैं कि वे मानवीय जिम्मेदारियों की वास्तविकता को अलग कर देते हैं, और फिर हम ऐसे लोगों को भी पाते हैं जो मानवीय इच्छा और मानवीय जिम्मेदारी पर इस हद तक बल देते हैं कि वे परमेश्वर की सर्वोच्चता को नकार देते हैं। इस प्रकार की धारणाओं पर कलीसिया में आज इतना असमंजस है कि हमें परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानवीय जिम्मेदारी के बाइबल के दृष्टिकोण को देखने के लिए रूकना पड़ेगा। परमेश्वर की सर्वोच्चता की बाइबल की धर्मशिक्षा हमें एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती है जिससे कि हम यह समझ सकें कि भविष्यवक्ताओं ने भविष्य के बारे में किस प्रकार बताया था।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम परमेश्वर की सर्वोच्चता के विषय का अध्ययन कर सकते हैं, परन्तु हम दो पारंपरिक धर्मविज्ञानी विषयों को देखने जा रहे हैं: पहला, परमेश्वर का अपरिवर्तित रहना; और दूसरा परमेश्वर का विधान। आइए पहले हम देखें कि परमेश्वर के अपरिवर्तित होने के विषय में बाइबल क्या कहती है।

परमेश्वर का अपरिवर्तित होना

परमेश्वर के अपरिवर्तित रहने की धर्मशिक्षा को सरल रूप में कहें तो यह है कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं है। अब हमें सावधान रहना चाहिए जब हम यह कहते हैं क्योंकि परमेश्वर हमारी हर कल्पना में अपरिवर्तित नहीं है। अनेक सदियों से पारंपरिक विधिवत् धर्मविज्ञान उन विशेष तरीकों को पहचानने में सावधान रहा है जिनमें परमेश्वर अपरिवर्तित रहा है। वास्तव में, तीन मुख्य रूप हैं जिनमें परमेश्वर को अपरवर्तित कहा जा सकता है।

परमेश्वर का चरित्र

पहला यह है कि परमेश्वर का चरित्र नहीं बदलता। परमेश्वर सदैव प्रेममय है, सदैव न्यायी है, सदैव सर्वज्ञानी है, सदैव सर्वशक्तिमान है, सदैव सर्वव्यापी है। परमेश्वर की विशेषताएं समय के साथ नहीं बदलती हैं। इब्रानियों 13:8 में जब इब्रानियों के लेखक ने यह लिखा तो उसका अर्थ यही था :

> यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है। (इब्रानियों 13:8)

परमेश्वर उससे भिन्न बन ही नहीं सकता जो वह है। हम उसके चरित्र को अपरिवर्तनशील कह सकते हैं क्योंकि उसकी विशेषताएं अपरिवर्तनीय हैं।

वाचायी प्रतिज्ञाएं

एक और भाव है जिसमें परमेश्वर अपने चरित्र और विशेषताओं में अपरिवर्तनीय है। यह अपरिवर्तनीयता उसकी वाचायी प्रतिज्ञाओं से संबंधित है। जब परमेश्वर कोई वाचायी प्रतिज्ञा करता है तो वह सदैव बनी रहती है और कभी नहीं टूटती। एक बार फिर इब्रानियों का लेखक इस विषय में वचन की शिक्षाओं को संक्षेप में सारगर्भित करता है। इब्रानियों 6:16-17 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उन के हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। इसलिये जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया। (इब्रानियों 6:16-17)

जैसे कि यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है, जब परमेश्वर वाचा के तहत कोई प्रतिज्ञा करता है तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह अपनी कही हुई बात से पीछे नहीं हटेगा।

अनन्त सम्मति

एक तीसरा रूप जिसमें वचन सिखाता है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, वह है उसकी अनन्त सम्मति या ब्रह्मांड के लिए उसकी अनन्त योजना के विषय में। हालांकि कुछ मसीही समूह पवित्रशास्त्र में इस शिक्षा को नहीं देख पाते, इस अध्याय में हम जो कुछ भी कहते हैं वह इस धारणा पर आधारित है कि परमेश्वर ही के पास अपरिवर्तनीय योजना है और यह योजना सारे इतिहास को संचालित करती है। विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकरण का उल्लेख इस धर्मशिक्षा को सारगर्भित करने में सहायता करता है। विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकरण के अध्याय 3, अनुच्छेद 1 में हम परमेश्वर की अनन्त योजना के बारे में इन शब्दों को पढ़ते हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर ने अनन्तता से ही स्वयं अपनी इच्छा की बुद्धिमानी और अतिपवित्र सम्मति के द्वारा स्वतंत्र एवं अपरिवर्तनीय रूप से उस सब को निर्धारित किया जो घटित होता है।

अंगीकरणरूपी यह कथन बहुत ही स्पष्ट रूप में परमेश्वर की सर्वोच्चता को अभिव्यक्त करता है। सरल रूप में कहें तो परमेश्वर के पास ब्रह्मांड के लिए एक योजना है। यह सर्वव्यापी है, और यह असफल नहीं हो सकती। प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्रियों में परमेश्वर की इस योजना के बारे में बात की। उदाहरण के तौर पर, इफिसियों 1:11 में उसने ये शब्द कहे :

> (परमेश्वर) अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है। (इफिसियो 1:11)

प्रेरित के अनुसार परमेश्वर के पास योजना है जिसमें सब कुछ सम्मिलित है, और परमेश्वर उस योजना के अनुरूप सब कार्य करेगा।

भविष्यवक्ता यशायाह ने परमेश्वर की इस सर्वव्यापी योजना के बारे में बात की। यशायाह 46:9-11 में हम भविष्यवक्ता से इन शब्दों को पाते हैं :

> मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा... मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूंगा, मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूंगा। (यशायाह 46:9-11)

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता की बाइबलीय धर्मशिक्षा पर विश्वास किया था। परमेश्वर अपने चरित्र में, अपनी वाचायी प्रतिज्ञाओं में और ब्रह्मांड के लिए अपनी अनन्त योजना में अपरिवर्तनीय है। और चाहे इस्राएल के इतिहास में कुछ भी क्यों न हुआ हो, भविष्यवक्ता यह समझ गए थे कि परमेश्वर अपने चरित्र के प्रति सदैव सच्चा रहेगा। वे समझ गए थे कि वह अपनी वाचायी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ रहेगा, और वे यह भी जानते थे कि सब बातों पर परमेश्वर की सम्मति और उसका नियंत्रण कभी असफल नहीं होगा। जब हम भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं तो हम पाएंगे कि बहुत बार भयानक बातें हुईं, परन्तु परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता में उनके विश्वास ने उन्हें हमेशा बनाए रखा।

यह देखने के बाद कि परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता ने सारी भविष्यवाणियों की पृष्ठभूमि प्रदान की है, तो हमें सिक्के के दूसरे पहलू को भी याद रखना है। परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता की धर्मशिक्षा को परमेश्वर के विधान की धर्मशिक्षा के साथ भी संतुलित किया जाना आवश्यक है।

परमेश्वर का विधान

परमेश्वर के विधान को इतिहास में परमेश्वर की सक्रिय भागीदारी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जब वह ब्रह्मांड के लिए अपनी अनन्त योजना को क्रियान्वित करता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर अपनी अपरिवर्तनीय योजना को पूरा होते हुए केवल दूर से देखता ही नहीं रहता। इसकी अपेक्षा, उसके पास अपनी योजना में स्वयं के लिए भी एक भूमिका है। इसीलिए बाइबल प्रायः परमेश्वर को जीवित परमेश्वर के रूप में दर्शाती है। यह इसलिए है क्योंकि वह इतिहास के मंच पर एक कार्यकर्ता है और अपने विधान में नियमित रूप से अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता रहता है। एक बार फिर विश्वास का वेस्टमिंस्टर

अंगीकरण इन विषयों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमारी सहायता कर सकता है। अध्याय 5, अनुच्छेद 2 में परमेश्वर के विधान के विषय में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> यद्यपि परमेश्वर के पूर्वज्ञान और उसके नियमों के संबंध में पहले पहल तो सब बातें अपरिवर्तित एवं त्रुटिरहित रूप में घटित होती हैं; फिर भी, उसी विधान के द्वारा वह या तो आवश्यक रूप में, या स्वतंत्र रूप में या संभावना के रूप में द्वितीयक कारणों की प्रकृति के अनुसार उन्हें अलग-अलग रखता है।

यहां पर हम पहले यह देखते हैं कि अनन्त दृष्टिकोण से परमेश्वर की योजना बिना असफल हुए, अपरिवर्तनीय और त्रुटिरहित रूप से पूरी होगी। परन्तु ऐतिहासिक, विधानीय दृष्टिकोण से हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर भिन्न-भिन्न तरीकों से अपनी सृष्टि के साथ कार्य करने के द्वारा अपनी योजना को पूरा करता है। वह कम से कम तीन भिन्न-भिन्न तरीकों में द्वितीयक कारणों या सृष्टिसंबंधी कारणों के साथ कार्य करता है। परमेश्वर घटनाओं को क्रमबद्ध करने के द्वारा अपनी योजना को क्रियान्वित करता है ताकि वे एक दूसरे के साथ या तो आवश्यक रूप से, या मुक्त रूप से या मानवीय संभावनाओं के रूप में आते हैं। ये भिन्नताएं महत्वपूर्ण हैं, इसलिए आइए हम उनको और थोड़ा विस्तार से देखें।

कभी-कभी परमेश्वर का विधान किन्हीं बातों को आवश्यक रूप से होने को बाध्य करता है। यहां वे घटनाएं मन में हैं जो प्रकृति के नियमित नियमों के अनुसार घटती हैं, जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम। प्रकृति के नियम परमेश्वर के विधान के निर्धारित और आवश्यक प्रारूपों को प्रदान करते हैं, फिर भी इसके साथ-साथ, विश्वास का अंगीकरण भी कहता है कि कुछ घटनाएं स्वतंत्र या मुक्त रूप से घटती हैं। दूसरे शब्दों में, वे मानवीय दृष्टिकोण से यहां-वहां प्रकट होती है। पासा फेंकना, मौसम के परिवर्तन और जीवन में ऐसी अन्य बातें परमेश्वर के ही अधीन होती हैं, परन्तु मनुष्य के दृष्टिकोण से वे बिना किसी पूर्व नियोजित रूप में या स्वतंत्र रूप में होती हैं। अंत में विश्वास का अंगीकरण हमें बताता है कि इतिहास में कुछ बातें मानवीय संभावनाओं के संबंध में होती हैं। निसंदेह, परमेश्वर का सदैव इन सब बातों पर नियंत्रण था, परन्तु उसने मानवीय इच्छा की संभावनाओं के साथ कार्य करने के द्वारा इन विषयों पर इतिहास की दिशा को नियंत्रित किया।

भविष्यवक्ताओं ने न केवल यह विश्वास किया कि परमेश्वर की अनन्त योजना बिना असफल हुए संपूर्ण रूप से पूरी होगी, बल्कि यह भी विश्वास किया कि परमेश्वर की योजना में मानवीय इच्छा और मानवीय प्रतिक्रिया भी शामिल होती हैं। भविष्यवाणीय सेवा में इस बात ने इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की कि हमें इसे सावधानीपूर्वक देखना आवश्यक है। परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता और विधान को मन में रखते हुए, अब हम हमारे दूसरे विषय की ओर बढ़ सकते हैं: भविष्यवाणियां और मानवीय संभावनाएं।

भविष्यवाणियां और मानवीय संभावनाएं

अब तक हम देख चुके हैं कि कभी-कभी परमेश्वर मानवीय इच्छा की संभावनाओं के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है। यहां पर हम यह देखने जा रहे हैं कि इस प्रकार की मानवीय संभावनाओं का पुराने नियम की भविष्यवाणी पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। कभी-कभी भविष्यवाणी और उस भविष्यवाणी की पूर्णता के बीच मानवीय इच्छा के हस्तक्षेप का इतिहास के परिणाम पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है। भविष्यवाणियों और मानवीय संभावनाओं के बीच संबंध को जानने के लिए हमें दो विषयों को देखना होगा:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पहला, वे सामान्य प्रारूप जिनकी अपेक्षा करना हमें बाइबल सिखाती है; और दूसरा, इस कार्य के कुछ विशिष्ट उदाहरण।

सामान्य प्रारूप

आइए पहले हम आधारभूत या सामान्य प्रारूप को देखें जिसमें भविष्यवाणियां और ऐतिहासिक संभावनाएं शामिल होती हैं। इस सामान्य प्रारूप को देखने में सहायता करने वाला शायद सबसे उत्तम अनुच्छेद है यिर्मयाह 18:1-10। यह अनुच्छेद इतना महत्वपूर्ण है कि हमें इसे बहुत ध्यान से देखना चाहिए। हम इस अनुच्छेद के तीन पहलुओं को देखेंगे: पहला, 18:1-4 में यिर्मयाह का अवलोकन; दूसरा, 5 और 6 पदों में यहोवा का स्पष्टीकरण; और तीसरा, 7 से 10 पदों में यहोवा की व्याख्या।

अवलोकन

पहले हम 1 से 4 पदों में यिर्मयाह के अवलोकन को देखते हैं :

> यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, उठ कर कुम्हार के घर जा, और वहां मैं तुझे अपने वचन सुनवाऊंगा। सो मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है! और जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया। **(यिर्मयाह 18:1-4)**

परमेश्वर यिर्मयाह से कुम्हार के घर जाने के लिए कहता है। यिर्मयाह कुम्हार के घर में प्रवेश करता है जहां कुम्हार मिट्टी के साथ एक विशेष रूप में कार्य करता है और फिर अपने ढांचे को बदलता है जब वह देखता है कि मिट्टी बिगड़ गई है। कुम्हार मिट्टी के उस गोले के साथ कार्य करता है, और अपनी सर्वोत्तम कल्पना के अनुसार उसे आकार देता है। कुम्हार के घर पर यिर्मयाह के अवलोकन का एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक महत्व था जो परमेश्वर यिर्मयाह को दिखाना चाहता था। इसलिए 5 और 6 पदों में यहोवा ने यिर्मयाह को इस अनुभव का महत्व बताया :

> तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे इस्राएल के घराने, यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। **(यिर्मयाह 18:5-6)**

स्पष्टीकरण

यह अनुच्छेद वही बताता है जो बाइबल के कई अन्य अनुच्छेद बताते हैं; कुम्हार यहोवा को दर्शाता है और मिट्टी इस्राएल को। जैसे कि यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है, परमेश्वर के पास वह अधिकार सुरक्षित है, वह अपने लोगों के साथ वैसा ही करे जो उसे सर्वोत्तम लगता है, वैसे ही जैसे कुम्हार अपनी मिट्टी के साथ करता है। निसंदेह, जैसा कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर अपने अपरिवर्तनीय चरित्र, अपनी वाचाओं और अपनी अनन्त योजना का उल्लंघन कभी नहीं करेगा। फिर भी, इन मापदंडों के भीतर परमेश्वर उन तरीकों को बदलने के लिए स्वतंत्र है जिनमें वह अपने लोगों को चलाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

व्याख्या

कुम्हार के अवलोकन और परमेश्वर के स्पष्टीकरण को मन में रखते हुए, अब हम इस स्थिति में हैं कि हम यह देख सकें परमेश्वर ने इस घटना की व्याख्या किस प्रकार की। संक्षेप में, परमेश्वर ने कुम्हार और मिट्टी की इस समरूपता को भविष्यवक्ता की भविष्यवाणियों पर लागू किया। पहला, परमेश्वर ने पद 7 और 8 में दण्ड की भविष्यवाणियों का उल्लेख किया :

> जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नष्ट करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने की ठानी हो पछताऊँगा। **(यिर्मयाह 18:7-8)**

ध्यान दीजिए, परमेश्वर ने किस प्रकार परिस्थिति का वर्णन किया। वह कहता है कि वह किसी भी समय, किसी भी राष्ट्र के विषय में दण्ड की घोषणा कर सकता है। फिर भी, यदि पश्चाताप की हस्तक्षेप करने वाली कोई भी ऐतिहासिक मानवीय संभावना हो तो परमेश्वर उसमें नरमी दिखा सकता है। उस भविष्यवाणी की पूर्णता फिर शायद वैसी न हो जैसी बताई गई थी। संक्षेप में, मानवीय इच्छा की ऐतिहासिक संभावना परमेश्वर द्वारा दण्ड की भविष्यवाणी की पूर्णता में एक बड़ा अंतर ला सकती है।

अब यह दिखाने के लिए कि यह सिद्धांत अन्य प्रकारों की भविष्यवाणियों में भी लागू होता है, परमेश्वर ने 9 और 10 पदों में आशीष की भविष्यवाणियों के बारे में बात की :

> और जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि मैं उसे बनाऊंगा और रोपूंगा, तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैं ने उनके लिये करने को कहा हो, पछताऊंगा। **(यिर्मयाह 18:9-10)**

समानान्तर परिस्थिति पर ध्यान दीजिए। परमेश्वर ने कहा कि किसी भी समय और किसी भी राष्ट्र के बारे में वह सुरक्षा और खुशहाली की आशीष की घोषणा कर सकता है; परन्तु यदि विद्रोह और अनाज्ञाकारिता की हस्तक्षेप करने वाली कोई भी ऐतिहासिक संभावना होगी तो उसका परिणाम यह होगा कि परमेश्वर जिस भलाई को करना चाहता था उससे पीछे हट जाएगा।

यिर्मयाह अध्याय 18 हमें एक सिद्धांत सिखाता है जिसे हमें हर बाइबलीय भविष्यवाणी पर लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर ने यिर्मयाह को बताया कि वह मनुष्यों के दण्ड की चेतावनियों और आशीष के प्रस्तावों के प्रति प्रत्युत्तर पर प्रतिक्रिया देने के लिए स्वतंत्र है। जब हम बाइबलीय भविष्यवाणी को देखते हैं तो हम पाएंगे कि परमेश्वर ने प्रायः पहले यह देखा कि लोग भविष्यवाणी के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं और फिर निर्धारित किया कि उनके भविष्य के साथ क्या करना है।

विशेष उदाहरण

अब जब हमने भविष्यवाणियों और संभावनाओं के सामान्य सिद्धांत को देख लिया है, तो इस सिद्धांत के क्रियान्वयन के कुछ उदाहरणों को देखना सहायक होगा। बाइबल में अनगिनत ऐसे उदाहरण हैं जब मानवीय इच्छा की संभावना ने भविष्यवाणियों की पूर्णता में एक बड़ा फेरबदल किया। इस प्रकार के फेरबदल

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

की अनेक घटनाओं में से केवल दो उदाहरणों को हम देखने जा रहे हैं: पहला, भविष्यवक्ता शमायाह की भविष्यवाणी, और फिर योना की भविष्यवाणी।

शमायाह की भविष्यवाणी

आइए पहले हम शमायाह की भविष्यवाणी को देखें। 2इतिहास 12:5 में हम दण्ड के विषय में शमायाह की घोषणा को देखते हैं:

> तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के हाकिमों के पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे, आ कर कहने लगा, यहोवा यों कहता है, कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है, इसलिये मैं ने तुम को छोड़ कर शीशक के हाथ में कर दिया है। (2 इतिहास 12:5)

ध्यान दीजिए कि शमायाह ने इस भविष्यवाणी के लिए कोई परिस्थितियां प्रदान नहीं की हैं। भविष्यवक्ताओं की सेवकाइयों से अपरिचित लोगों को ऐसा लगता है जैसे कि शमायाह ने परमेश्वर की अनन्त, अपरिवर्तनीय आज्ञा प्रदान की। परन्तु रहूबियाम और यहूदा बेहतर रीति से जानते थे। उनकी आशा थी कि ये शब्द परमेश्वर की ओर से एक चेतावनी मात्र थे, ऐसी चेतावनी कि परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। अतः हम 12:6 में इन शब्दों को पाते हैं:

> तब इस्राएल के हाकिम और राजा दीन हो गए, और कहा, यहोवा धर्मी है। (2 इतिहास 12:6)

जब रहूबियाम और अगुवों ने दण्ड की भविष्यवाणी को सुना तो वे जानते थे कि उन्हें क्या करना था। उन्हें उसकी दया पाने के लिए पश्चाताप और विश्वास के साथ परमेश्वर को पुकारना था।

जब हम इस अनुच्छेद को पढ़ना जारी रखते हैं तो पाते हैं कि शमायाह की भविष्यवाणी की पूर्णता पर एक विनम्र प्रार्थना की ऐतिहासिक संभावना के हस्तक्षेप का नाटकीय प्रभाव पड़ा था। वास्तव में, शमायाह ने स्वयं भी इस प्रभाव को माना। यहूदा के अगुवों के पश्चाताप के बाद, सुनिए उसने क्या कहा। 7 और 8 पदों में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुंचा कि वे दीन हो गए हैं, मैं उन को नष्ट न करूंगा, मैं उनका कुछ बचाव करूंगा, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न भड़केगी। तौभी वे उसके आधीन तो रहेंगे, ताकि वे मेरी और देश देश के राज्यों की भी सेवा जान लें। (2 इतिहास 12:7-8)

यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि शमायाह की सेवकाई आज के प्रचारकों जैसी थी। उसने आने वाले दण्ड की चेतावनी दी, इसलिए नहीं कि वह लोगों को अनन्तकाल के नरक में भेज दे, बल्कि इसलिए कि लोग यह चेतावनी सुन सकें, पश्चाताप करो और फिर परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करो। अतः हम देखते हैं कि प्रार्थना की मानवीय प्रतिक्रिया ने उस रूप में एक महत्वपूर्ण अंतर पैदा किया जिसमें शमायाह की भविष्यवाणी पूरी होगी। इस विषय में शमायाह की भविष्यवाणी पूरी तरह से नहीं बदली गई, परन्तु नरम या मुलायम कर दी गई ताकि यरूशलेम के विरूद्ध आक्रमण उतना बड़ा न हो जितना हो सकता था।

योना की भविष्यवाणी

भविष्यवाणियों के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं के प्रभाव का दूसरा उदाहरण योना की पुस्तक में प्रकट होता है। योना की कहानी से हम सब परिचित है। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने योना को आने वाले दण्ड की घोषणा करने के लिए निनवे नगर को भेजा। योना 3:4 में योना यह कहता है :

> अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा। (योना 3:4)

इस भविष्यवाणी से सरल और क्या हो सकता है? योना ने घोषणा की कि निनवे नगर के पास नाश होने से पहले केवल चालीस दिन थे। कोई "यदि" नहीं थे, कोई "और" नहीं थे, और न ही कोई "परन्तु" थे। परन्तु क्या हुआ? शेष अध्याय हमें बताते हैं। निनवे के राजा और लोगों ने अपने जानवरों के साथ अपने पापों के पश्चाताप में टाट के वस्त्र पहने और राख मली। राजा ने 3:7-9 में यह घोषणा की :

> क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या अन्य पशु, कोई कुछ भी न खाए; वे न खाएँ और न पानी पीएँ। मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें। सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नष्ट होने से बच जाएँ। (योना 3:7-9)

सरल रूप में कहें तो पश्चाताप की हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावना भविष्यवाणी के पूरा होने से पहले हुई। लोगों ने प्रभु के समक्ष पश्चाताप में स्वयं को नम्र किया। और फिर इस ऐतिहासिक संभावना का क्या परिणाम रहा? 3:10 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया। (योना 3:10)

योना की भविष्यवाणी की पूर्णता निनवे के पश्चाताप से बहुत अधिक प्रभावित हुई। उसने बाद में 4:2 में इस प्रकार यहोवा से शिकायत की :

> मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, विलम्ब से कोप करने वाला करूणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता। (योना 4:2)

जब उसने यह भविष्यवाणी की तो योना तभी जानता था कि परमेश्वर शायद नगर का विनाश न करे। वास्तव में उसके सौ वर्षों के बाद भी निनवे का विनाश नहीं हुआ, उसके बाद ही बेबीलोन के लोगों ने इसको तहस-नहस किया।

यिर्मयाह अध्याय 18 के सामान्य सिद्धान्त और इन दो विशेष उदाहरणों से हम देखते हैं कि बहुत बार मानवीय इच्छा की संभावना ने भविष्यवाणियों के पूर्ण होने के तरीकों को प्रभावित किया। कभी-कभी परमेश्वर ने दण्ड या आशीष को उलट दिया; कभी-कभी उसने आशीष को कम किया और दण्ड की तीव्रता को हल्का किया; और कभी-कभी वह दण्ड या आशीषों को बढ़ा देता है, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि मनुष्यों ने भविष्यवाणिय वचन का किस प्रकार प्रत्युत्तर दिया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब जब हमने यह देख लिया है कि हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाएं भविष्यवाणियों की पूर्णता को प्रभावित कर सकती हैं, इसलिए अब हमें हमारे अगले विषय की ओर मुड़ना चाहिए। पुराने नियम के विश्वासियों ने जब भविष्यवाणी को सुना तो उनके अन्दर कैसी निश्चितता या विश्वास था? और वे कितने आश्वस्त हो सकते थे कि परमेश्वर भविष्यवक्ताओं द्वारा की गई भविष्यवाणियों को पूरा करेगा?

भविष्यवाणियों की निश्चितता

इस प्रश्न का उत्तर पुराने नियम की भविष्यवाणी में पाई जाने वाली भविष्यवाणियों के प्रकारों का पुनरावलोकन करने में सहायता करेगा। जैसा कि हम पिछले अध्यायों में देख चुके हैं, एक धूरी जिसके साथ हम पुराने नियम की भविष्यवाणियों को रख सकते हैं, वह है- वाचायी आशीषों और दण्ड के बीच का फेरबदल। भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को प्रकृति और युद्ध में परमेश्वर की आशीषों और प्रकृति और युद्ध में उसके दण्ड की घोषणा के रूप वर्गीकृत किया जा सकता है। पिछले अध्यायों में हम एक अन्य संगठन-संबंधी धूरी को देख चुके हैं। सभी भविष्यवाणियां बड़े और छोटे दण्ड एवं आशीषों के आस-पास दिखाई देती हैं। आपको याद होगा कि अनेक प्रकार की छोटी आशीषों और दण्ड की घोषणा भविष्यवक्ताओं द्वारा की गईं, परन्तु सबसे बड़ा दण्ड बंधुआई की चेतावनी थी और सबसे बड़ी आशीष बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना थी। भविष्यवाणियों के प्रति यह आधारभूत दृष्टिकोण उस मूलभूत संदेश को देखने में सहायता करता है जो भविष्यवक्ताओं ने अपने मूल श्रोताओं को दिया था।

इस बिंदू पर हमें भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों में तीसरे पहलू को जोड़ना जरूरी है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने अपने श्रोताओं को न केवल बड़ी और छोटी आशीषों एवं दण्ड के बारे में बताया, बल्कि उन्होंने किसी न किसी तरीके से दण्ड को लागू करने की परमेश्वर की दृढ़ता के स्तर को भी दर्शाया। एक ओर भविष्यवक्ताओं ने अपने श्रोताओं को बताया कि परमेश्वर में किसी विशेष परिदृश्य के साथ कार्य को पूरा करने का बहुत ही कम संकल्प था। दूसरी ओर उन्होंने दर्शाया कि परमेश्वर अपनी भविष्यवाणियों को पूरी करने के लिए पूरी तरह से दृढ़ था। यह याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि जब भविष्यवक्ता परमेश्वर के विषय में कहता है कि उसमें भविष्यवाणी को पूरा करने के उच्च या निम्न स्तर हैं तो वे उसके बारे में मानवीय रूप में बात कर रहे हैं। परमेश्वर की अनन्त अपरिवर्तनीय योजना के संदर्भ में परमेश्वर उस सब को पूरा करेगा जो वह चाहता है। परन्तु जब परमेश्वर मनुष्यों से बात कर रहा था और अपने विधान में अपनी योजना को पूरा कर रहा था, तो उसने प्रकट किया कि कभी-कभी उसकी दृढ़ता बहुत ऊंची और कभी-कभी बहुत निम्न थी।

सशर्त भविष्यवाणियां

पुराने नियम की भविष्यवाणियों के इस पहलू को समझने के कई तरीके हैं, परन्तु हम परमेश्वर की दृढ़ता के साथ-साथ चार भिन्न-भिन्न बिंदुओं को देखेंगे। पहला, भविष्यवक्ताओं ने अनेक भविष्यवाणियां की जो दर्शाती हैं कि परमेश्वर ने इतिहास को किसी एक दिशा में नहीं मोड़ा। उन्होंने विशेष शर्तों के साथ अपनी भविष्यवाणियों को जोड़ने के द्वारा ऐसा किया। "यदि... तो" के कथनों के रूप में विशेष शर्तें पुराने नियम की भविष्यवाणियों में बहुत बार दिखाई देती हैं। उदाहरण के तौर पर यशायाह 1:19-20 में हम इस सशर्त भविष्यवाणी को पढ़ते हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यदि तुम आज्ञाकारी हो कर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे, और यदि तुम ना मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे, यहोवा का यही वचन है। (यशायाह 1:19-20)

इस अनुच्छेद में भविष्यवक्ता इसे पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के लोगों के पास विकल्प था। यदि उन्होंने यहोवा के प्रति स्वयं को समर्पित किया तो वे आशीष पाएंगे, परन्तु यदि नहीं किया तो उन्हें दण्ड मिलेगा। बहुत बार, भविष्यवक्ता इस प्रकार की परिस्थितियों को दर्शाते हैं ताकि लोग जान जाएं कि परमेश्वर उस दिशा के प्रति खुला था जो इतिहास लेगा, और उस दिशा का निर्धारण उन विकल्पों पर आधारित होगा जो वे चुनेंगे।

अनाधिकृत भविष्यवाणियां

निर्धारण की धूरी पर एक दूसरा बिंदू अनाधिकृत भविष्यवाणियों में प्रकट होता है। ये अनुच्छेद भविष्य के विषय में सामान्य कथन हैं। उनमें कोई विशेष शर्तें प्रकट नहीं होती। भविष्यवक्ताओं ने प्रकट किया कि ऐसे विषयों में परमेश्वर भविष्य को किसी एक विशेष दिशा में ले जाने के लिए अधिक दृढ़ था। परन्तु इन भविष्यवाणियों के परिणामों से हम जानते हैं कि मानवीय प्रत्युत्तरों के उच्च स्तर घटनाओं को भिन्न दिशाओं में मोड़ सकते हैं। इस प्रकार की भविष्यवाणी के एक उदाहरण को हम पहले ही देख चुके हैं। योना 3:4 में भविष्यवक्ता ने ये शब्द कहे :

> अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा। (योना 3:4)

इस भविष्यवाणी में कोई स्पष्ट शर्तें नहीं हैं, और भविष्यवक्ता योना इसे स्पष्ट कर रहा है कि परमेश्वर नगर का विनाश करने के लिए दृढ़ था। फिर भी निनवे नगर में महत्वपूर्ण और व्यापक पश्चाताप ने परमेश्वर को नगर के विरूद्ध अपना दण्ड भेजने में देर करने को मजबूर किया।

अनाधिकृत भविष्यवाणियों के रूप में भी वाचायी आशीषें प्रकट होती हैं। सुनिए हाग्गै ने जरूब्बाबेल से हाग्गै 2:21-23 में क्या कहा :

> मैं आकाश और पृथ्वी दोनों को कम्पाऊंगा, और मैं राज्य-राज्य की गद्दी को उलट दूंगा, मैं अन्यजातियों के राज्य-राज्य का बल तोडूंगा... उस दिन, हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास जरूब्बाबेल, मैं तुझे ले कर अंगूठी के समान रखूंगा, यहोवा की यही वाणी है, क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है। (हाग्गै 2:21-23)

यह अनुच्छेद इसे पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि परमेश्वर इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों को नाश करने और अपने लोगों पर जरूब्बाबेल को राजा बनाने के लिए तैयार था।

इसमें कोई विशेष शर्तें नहीं हैं, फिर भी हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ। जरूब्बाबेल कभी परमेश्वर के लोगों पर राजा नहीं बना और इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों का विनाश नहीं हुआ। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि बंधुआई के बाद के लोग यहोवा के प्रति आज्ञाकारी होने में असफल हो गए और इस मानवीय संभावना का भविष्यवाणी के पूरा होने के तरीके पर भी प्रभाव पड़ा।

अभिपुष्ट भविष्यवाणियां

यद्यपि कुछ भविष्यवाणियां परमेश्वर को कई संभावनाओं के समक्ष खुला पाती हैं, वहीं पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कभी-कभी दर्शाया कि परमेश्वर घटनाओं को एक विशेष दिशा में ले जाने के प्रति बहुत अधिक दृढ़ था। यह दिखाने के द्वारा कि परमेश्वर ने कुछ भविष्यवाणियों की पुष्टि की, उन्होंने परमेश्वर की गहरी दृढ़ता को बताया। दो मुख्य तरीके हैं जिनमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने अपनी भविष्यवाणियों की पुष्टि की: पहला, परमेश्वर ने शब्दों के द्वारा अपनी गहरी दृढ़ता को दर्शाया; दूसरा उसने चिन्हों के द्वारा अपने इरादों को दर्शाया। आइए पहले हम मौखिक पुष्टियों को देखें जो परमेश्वर ने अपने लोगों को दीं।

शब्द

मौखिक अभिपुष्टि का एक सर्वोत्तम उदाहरण आमोस के पहले अध्याय में प्रकट होता है। सुनिए भविष्यवक्ता आमोस 1:3 में क्या कहता है :

> दमिश्क के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा। (आमोस 1:3)

ये शब्द, "मैं न छोड़ूंगा" इस अध्याय की भविष्यवाणियों की पुनरावर्ती विशेषता की रचना करता है। परमेश्वर ने इस कथन को बार-बार क्यों दोहराया? वह यह बताना चाहता था कि दण्ड की इन बातों को पूरा करने के लिए उसमें एक उच्च स्तर की दृढ़ता थी। परन्तु क्या इस दृढ़ता का अर्थ था कि परमेश्वर के दण्ड से बचने का कोई रास्ता नहीं था? भविष्यवक्ता ने यह स्पष्ट कर दिया था कि सच्चा और पूरा पश्चाताप परमेश्वर के क्रोध को हटा सकता है। सुनिए यहोवा ने आमोस 5:4 और 6 में क्या कहा :

> यहोवा, इस्राएल के घराने से यों कहता है, मेरी खोज में लगो, तब जीवित रहोगे... यहोवा की खोज करो, तब जीवित रहोगे, नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं भड़केगा, और वह उसे भस्म करेगी। (आमोस 5:4, 6)

आमोस अध्याय 1 और 2 दर्शाते हैं कि परमेश्वर इस्राएल के विरूद्ध भी अपनी क्रोधरूपी अग्नि को भेजने के प्रति बहुत दृढ़ था, परन्तु यह अनुच्छेद दर्शाता है कि सच्चा और संपूर्ण पश्चाताप परमेश्वर के क्रोध को भी प्रभावित कर सकता है। पुराने नियम की भविष्यवाणी के कई अनुच्छेद इस प्रकार के हैं। भविष्यवक्ता दर्शाते हैं कि अपनी दृढ़ता की पुष्टि करने के लिए शब्दों का इस्तेमाल करने के द्वारा परमेश्वर कितना अधिक दृढ-संकल्पी है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि वे अपने श्रोताओं को परमेश्वर को निष्ठा के साथ खोजने और सच्चाई से पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

चिन्ह

भविष्यवक्ताओं ने न केवल परमेश्वर के गहरे दृढ़-संकल्प की मौखिक अभिपुष्टियों को जोड़ा, बल्कि अपनी भविष्यवाणियों के साथ चिन्हों को जोड़ने के द्वारा ईश्वरीय ईरादों के उच्च स्तरों को भी प्रकट किया। पूरे नए नियम में हम पाते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने इस बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक चिन्हों और प्रतीकात्मक कार्यों को भी क्रियान्वित किया कि कुछ कार्यों को करने के लिए परमेश्वर के दृढ़-संकल्प के स्तर बहुत ऊंचे थे। जब किसी भविष्यवाणी के साथ चिन्ह जुड़े होते थे तो यह दर्शाता था कि भविष्यवक्ता ने जो भविष्यवाणी की है, परमेश्वर उसे पूरा करने के लिए बहुत दृढ़-संकल्पी था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस कार्य का एक बहुत ही स्पष्ट उदाहरण यशायाह अध्याय 7 में प्रकट होता है। आप याद करेंगे कि यशायाह ने आहाज को चेतावनी दी थी कि उसे परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए क्योंकि सीरियाई और इस्राएली उसके विरूद्ध आ रहे थे। परन्तु आहाज ने इनकार कर दिया, और इसलिए परमेश्वर ने यशायाह 7:11 में उससे यह कहा :

> अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग, चाहे वह गहिरे स्थान का हो, वा ऊपर आसमान का हो। (यशायाह 7:11)

यशायाह ने राजा को यह निश्चय दिलाया कि परमेश्वर उसकी सहायता करेगा, परन्तु अपनी पाखण्डता में आहाज ने इनकार कर दिया। इसलिए परमेश्वर ने उसे एक चिन्ह दिया, परन्तु यह उद्धार का चिन्ह होने की अपेक्षा दोष का चिन्ह बन गया।

अतः हम देखते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने न केवल सशर्त भविष्यवाणियां और अनाधिकृत भविष्यवाणियां कीं, बल्कि उन्होंने शब्दों और चिन्हों के द्वारा अपनी कई भविष्यवाणियों की अभिपुष्टि की ताकि वे यह प्रकट कर सकें कि परमेश्वर किसी एक विशेष दिशा में उन्हें पूरा करने के लिए उच्च स्तर में दृढ़-संकल्पी था।

शपथबद्ध भविष्यवाणियां

चौथे प्रकार की भविष्यवाणियां अपरिवर्तनशील रूप में दर्शाती हैं कि परमेश्वर भविष्यवक्ताओं द्वारा कही गई बातों को पूरा करने के लिए पूरी रीति से दृढ़-संकल्पी है। इस प्रकार की भविष्यवाणियां ईश्वरीय शपथों का रूप लेती हैं।

प्रायः भविष्यवक्ताओं के शब्द सामान्य रूप से घोषणा करते हैं कि परमेश्वर ने कुछ करने की शपथ ली है। उदाहरण के तौर पर आमोस 4:2 में परमेश्वर एक शपथ लेता है कि सामरिया की धनी स्त्रियों को शत्रुओं द्वारा ले जाया जाएगा। सुनिए भविष्यवक्ता इसे कैसे कहता है :

> परमेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आने वाले हैं, कि तुम कटियाओं से... खींच लिए जाओगे। (आमोस 4:2)

शपथ का एक सूत्र यहेजकेल 5:11 में प्रकट होता है। वहां पर हम ये शब्द पढ़ते हैं :

> इसलिये प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, इसलिये कि तू ने मेरे पवित्रस्थान को अपनी सारी घिनौनी मूरतों और सारे घिनौने कामों से अशुद्ध किया है... तुझ पर दया की दृष्टि न करूंगा। (यहेजकेल 5:11)

जब परमेश्वर भविष्यवाणी में एक शपथ को जोड़ता है, तो वह उस भविष्यवाणी को वाचायी निश्चितता के स्तर तक उठाता है। परमेश्वर ने अपनी वाचाओं में शपथें लीं कि उसने जो कुछ भी कहा है उसे पूरा करेगा। जब भविष्यवक्ता भविष्यवाणी में ईश्वरीय शपथ को जोड़ते हैं, तो यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने जो कुछ कहा है वह उसे पूरा करने के लिए दृढ़-संकल्पी है।

अब, जब यह सत्य है कि परमेश्वर के शपथ के साथ जोड़ी हुई भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए दृढ़-संकल्पी है, तो हमें यह भी देखना चाहिए कि कुछ रूपों में ऐतिहासिक संभावनाओं में हस्तक्षेप करने में परमेश्वर कुछ स्वतंत्रता रखता है। प्रायः “कब” वाले प्रश्न रह जाते है; भविष्यवाणी को पाने वाले लोगों की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रतिक्रियाओं के द्वारा समय को प्रभावित किया जा सकता है। दूसरा, विशेष रूप से भविष्यवाणी का अनुभव कौन करेंगे, यह प्रायः लचीला विषय रहता है। और तीसरा, भविष्यवाणी किस प्रकार पूरी होगी, उसके विवरणों को प्रायः बताया नहीं जाता था। और चौथा, किस स्तर तक भविष्यवाणी पूरी होगी, यह भी सदैव एक खुला प्रश्न रहता है।

आमोस 6:8 में पाई जाने वाली दण्ड की शपथ पर ध्यान दें :

> सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपनी ही शपथ खाकर कहा है),जिस पर याकूब घमण्ड करता है, उस से मैं घृणा, और उसे राजभवनों से बैर रखता हूँ, और मैं इस नगर को उस सब समेत जो उस में हैं, शत्रु के वश में कर दूंगा। (आमोस 6:8)

यद्यपि अपनी पुस्तक के आरंभ में आमोस ने बचने की संभावना को छोड़ दिया था, इस बिंदू पर आमोस सामरिया के संपूर्ण विनाश के विषय में कहता है। यह भी स्पष्ट है कि यह शपथ उन प्रश्नों का उत्तर नहीं देती जो अभी शेष थे, जैसे कि कब? क्या विनाश जल्द ही होगा, या फिर यह स्थगित हो जाएगा? कौन या कौनसे लोग मारे जाएंगे, बंधुआई में भेजे जाएंगे, या फिर बच जाएंगे, यह अभी भी शेष है, और किस माध्यम के द्वारा परमेश्वर नाश करेगा, यह भी स्पष्टतः बताया नहीं गया। और यह विनाश कितना भयंकर होगा, इस प्रश्न का उत्तर भी शेष है। इस्राएलियों को प्राप्त अनुभवों के प्रकाश में इन प्रश्नों के उत्तर मिलना अभी बाकी है। उनकी प्रार्थनाएं और पश्चाताप, उनका विद्रोह और अवज्ञा इस भविष्यवाणी की पूर्णता में महत्वपूर्ण अंतर पैदा कर सकते थे।

एक ऐसी ही परिस्थिति आशीष की ईश्वरीय शपथ के लिए भी सही थी। उदाहरण के तौर पर, यशायाह 62:8 में हम बंधुआई से लौटे लोगों के प्रति भी इस शपथ को पाते हैं :

> यहोवा ने अपने दाहिने हाथ की और अपनी बलवन्त भुजा की शपथ खाई है, निश्चय मैं भविष्य में तेरा अन्न अब फिर तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न दूंगा, और परदेशियों के पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके लिये तू ने परिश्रम किया है, नहीं पीने पाएंगे। (यशायाह 62:8)

इस अनुच्छेद से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को वाचा की भूमि पर लौटा ले आने की शपथ ली, ताकि लोग इस बात से आश्वस्त हो सकें कि यह भविष्यवाणी पूरी होगी। परन्तु फिर भी ऐसे प्रश्न बाकी थे जिनका उत्तर नहीं दिया गया था: परमेश्वर ऐसा कब करेगा? वाचा की भूमि पर कौन-कौन लौट के आएगा? किन माध्यमों के द्वारा वह इस पुनर्स्थापना को पूरा करेगा? और यह पुनर्स्थापना किस स्तर तक पूरी होगी? शपथों के साथ की गई भविष्यवाणियों में इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर सदैव शेष रह जाते हैं।

अतः हम देखते हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने दर्शाया था कि परमेश्वर के पास भविष्य को किसी विशेष दिशा में निर्देशित करने के दृढ़-संकल्प के भिन्न-भिन्न स्तर थे। कुछ भविष्यवाणियों ने प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया था कि वे पूरी तरह से खुली हुई थीं। अन्य इस रूप में अप्रत्यक्ष थीं। और कुछ भविष्यवाणियों को शब्दों और चिन्हों के साथ अभिपुष्ट किया गया था। और अंत में कुछ भविष्यवाणियों को ईश्वरीय शपथों के द्वारा निश्चित किया गया था।

जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को पढ़ते हैं तो भविष्यवाणियों और हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाओं के बीच संबंध को याद रखना महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के पास

भविष्यवक्ताओं के द्वारा कही जाने वाली बातों को पूरा करने में भिन्न-भिन्न स्तरों का दृढ़-संकल्प था, और यदि हम दृढ़-संकल्पों के इन भिन्न स्तरों को याद नहीं रखते तो हमें काफी हानि उठानी पड़ सकती है।

भविष्यवाणी के लक्ष्य

अब, जब हमने देख लिया है कि भविष्यवक्ताओं ने अपनी भविष्यवाणियों की निश्चितता को कैसे समझा था, तो हम इस अवस्था में हैं कि हम भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों के लक्ष्यों को पहचानें। भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणियां क्यों कीं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हमें पहले तो भविष्यवाणियों के उद्देश्य के प्रचलित दृष्टिकोणों और फिर सही दृष्टिकोणों को देखने की आवश्यकता है।

प्रचलित दृष्टिकोण

आइए सबसे पहले हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के उद्देश्य की प्रचलित गलत धारणा को देखें। यदि पुराने नियम की भविष्यवाणी के उद्देश्य का एक प्रभावी दृष्टिकोण है तो उसे "पूर्वानुमान" शब्द में सारगर्भित किया जा सकता है। जैसा कि हम जानते हैं जब चिकित्सीय विशेषज्ञ पूर्वानुमान के बारे में बोलते हैं तो वे हमें बताते हैं कि भविष्य में किसी बीमारी या हालत के परिणाम के बारे में वे क्या सोचते हैं। कई रूपों में अनेक मसीही भविष्यवक्ताओं को इसी प्रकार से समझते हैं। वे मानते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने केवल भविष्य ही बताया है, उन्होंने होने वाली घटनाओं को पहले से बताया है। अब इस दृष्टिकोण में सत्य की बात भी है। भविष्यवक्ता बताते हैं कि दिए गए किसी समय में परमेश्वर किसी न किसी मार्ग में जाने के लिए दृढ़-संकल्पी था। फिर भी हमें यह याद रखना चाहिए कि हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाएं भविष्यवाणियों के पूरा होने के तरीकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती थीं।

एक अनुच्छेद इस प्रचलित पूर्वाग्रह और पूर्वानुमान के पीछे खड़ा होता है, और वह है व्यवस्थाविवरण 18:20-22। इस अनुच्छेद में मूसा ने एक मानक की घोषणा की जिसके द्वारा इस्राएल को यह निर्धारित करना था कि क्या वह भविष्यवक्ता सच्चा या झूठा था। पद 21 एक प्रश्न को दर्शाता है जो मूसा ने इस्राएलियों के लिए पूछा:

> और यदि तू अपने मन में कहे, कि जो वचन यहोवा ने नहीं कहा उसको हम किस रीति से पहिचानें? (व्यवस्थाविवरण 18:21)

पद 22 इस प्रश्न का प्रत्युत्तर देता है:

> तो पहिचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं, परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उस से भय न खाना। (व्यवस्थाविवरण 18:22)

इस अनुच्छेद की एक प्रचलित गलत धारणा कुछ इस प्रकार बहती है: यदि यहोवा का एक सच्चा भविष्यवक्ता कुछ कहता है तो ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा उसने कहा था। परन्तु सच्चे भविष्यवक्ता की मूसा की बताई परख को लागू करने के लिए हमें वह याद रखना होगा जो हम पहले से ही इस अध्याय में देख

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चुके हैं। हमें भविष्यवक्ताओं के शब्दों को शाब्दिक रूप से नहीं लेना चाहिए। हमें भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों के पीछे के इरादों को समझना है। जब भविष्यवक्ताओं ने बोला तो उन्होंने यह भाव देने का प्रयास नहीं किया कि जो कुछ भी वे कह रहे हैं वह पूर्ण रूप से निश्चित है। उनके शब्दों ने कभी प्रत्यक्ष रूप से तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट किया कि मानवीय प्रतिक्रियाएं भविष्यवाणी की पूर्णता को प्रभावित कर सकती थीं। इसलिए जब हम भविष्यवक्ताओं पर मूसा की परख को लागू करते हैं तो हमें सदैव केवल यही नहीं पूछना है कि भविष्यवक्ता ने प्रत्यक्ष रूप से क्या कहा था, बल्कि यह भी कि उनकी भविष्यवाणियों पर कौन-कौन सी अप्रत्यक्ष अवस्थाएं लागू होती हैं।

मूसा और इस्राएल जानते थे कि भविष्यवाणी के लिए यह सत्य बात थी। वे जानते थे कि केवल ईश्वरीय शपथें ही किसी भविष्य की घटना की निश्चितता को दर्शाती थीं। वे यह भी जानते थे कि जब भविष्यवक्ताओं ने दण्ड के शब्द कहे तो उन्होंने सामान्यतः दण्ड पूरी तरह से भेज नहीं दिया बल्कि दण्ड के प्रति चेतावनी दी। उन्होंने समझ लिया था कि जब तक भविष्यवक्ताओं ने यह नहीं दर्शाया कि ईश्वरीय शपथ ली गई है तो उन्होंने आशीष की प्रतिज्ञा नहीं की थी बल्कि आशीष का प्रस्ताव दिया था। इन विषयों में मूसा की परख को हस्तक्षेप करने वाली महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संभावनाओं की उपस्थिति के साथ जोड़ा जाना जरूरी है। दूसरे शब्दों में यदि कुछ महत्वपूर्ण मानवीय प्रतिक्रियाएं प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करतीं तो मूसा की परख आसानी से लागू हो जाएगी। नहीं तो परमेश्वर के प्रत्युत्तर की संभावना को सकारात्मक रूप में देखना होगा। देखने वालों को एक प्रश्न पूछना जरूरी है, क्या वहां कोई हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाएं घटित हुईं? यदि हुईं, तो मूसा के परखों को उचित रूप से व्यवस्थित करना जरूरी है।

सही दृष्टिकोण

यदि यह सोचना गलत धारणा है कि पूर्वानुमान भविष्यवाणी का मुख्य लक्ष्य था, तो भविष्यवाणियों का मुख्य उद्देश्य क्या था? सरल रूप से कहें तो भविष्यवक्ताओं ने मुख्य रूप से अपने श्रोताओं को उत्साहित और सक्रिय करने के लिए भविष्य के बारे में बात की। इसे कहने का एक तरीका यह है कि भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को भविष्य के बारे में बताने के प्रति इतने उत्सुक नहीं थे जितने वे अपने श्रोताओं को भविष्य को बनाने के लिए सक्रिय करने के विषय में थे।

भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों के इस परिदृश्य को समझना उस तरीके को देखने में सहायता करेगा जिसमें पुराने नियम के विश्वासियों ने भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों का प्रत्युत्तर दिया था। पहला, हम वह देखेंगे जिसे हम कहते हैं "क्या जाने?" प्रतिक्रिया; और फिर दूसरा, हम वह देखेंगे जिसे हम "द्विरूपी" प्रतिक्रिया कह सकते हैं। परमेश्वर के लोगों की ये प्रतिक्रियाएं हमें भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों के लक्ष्यों को और अधिक स्पष्टता के साथ समझने में सहायता करेंगी।

"क्या जाने?" प्रतिक्रिया

पहली बात यह है कि हमें "क्या जाने?" प्रतिक्रिया पर ध्यान देना चाहिए। पुराने नियम में तीन अवसरों पर जब लोगों ने भविष्यवाणी को सुना तो उन्होंने ऐसी प्रतिक्रिया दी जो हमें अजीब प्रतीत हो सकती है। यह कहने की अपेक्षा, "अच्छा, अब हम जानते हैं कि भविष्य में क्या रखा है," उन्होंने कहा, "क्या जाने?" या जैसा कि उन्होंने इब्रानी में कहा, मी योदे आ (מִי יוֹדֵעַ)

यह "कौन जानता है?" प्रतिक्रिया ध्यान देने योग्य तीन परिस्थितियों में हुईं। पहला, जब नातान ने बेतशिबा के साथ दाऊद के व्यभिचार करने पर उसका सामना किया, उसने 2शमूएल 12:14 में यह भविष्यवाणी की:

> तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा। (2 शमूएल 12:14)

नातान ने भविष्यवाणी की कि दाऊद का पुत्र मरेगा, और हम पाते हैं कि ऐसा हुआ। परन्तु दाऊद ने बाद में अपने प्रांगण में लोगों के समक्ष स्पष्ट किया कि नातान के द्वारा भविष्यवाणी देने के बाद और उसके पुत्र के वास्तव में मरने से पहले वह क्या सोच रहा था। वह इन शब्दों को 2शमूएल 12:22 में कहता है:

> उसने उत्तर दिया, कि जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि क्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे। (2 शमूएल 12:22)

भविष्यवाणी के शब्दों को अवश्यंभावी रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा दाऊद ने सोचा था कि प्रार्थना और पश्चाताप के द्वारा इसे बदला जा सकता था। उसके प्रयास काम नहीं आए क्योंकि उसका पुत्र मर गया, परन्तु दाऊद का व्यवहार यहां स्पष्ट है। जब तक उसका पुत्र मर नहीं गया तब तक दाऊद को आशा थी, यह आशा कि “क्या जाने?”

इसी प्रकार भविष्यवक्ता योना ने निनवे नगर से कहा था कि दण्ड आने वाला है। उसकी पुस्तक के 3:4 में हम इस भविष्यवाणी को पढ़ते हैं :

> अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा। (योना 3:4)

एक बार फिर हम अपेक्षा कर सकते थे कि निनवे के लोगों को भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी को अवश्यंभावी रूप से स्वीकार करना था, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसकी अपेक्षा दाऊद के समान प्रत्युत्तर दिया। योना 3:9 में निनवे के राजा ने कहा :

> सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नाश होने से बच जाएं। (योना 3: 9)

तीसरे अवसर पर भविष्यवाणी के प्रति इसी प्रतिक्रिया को पाते हैं। योएल 2:1-11 में भविष्यवक्ता ने घोषणा की कि यरूशलेम के विरूद्ध एक भयानक दण्ड आने वाला है। परन्तु फिर भी योएल ने अपने श्रोताओं को पश्चाताप करने और उपवास रखने के लिए उत्साहित किया। पश्चाताप करने और उपवास रखने का उसका कारण 2:14 में स्पष्ट किया गया है। वहां हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> क्या जाने (परमेश्वर) फिरकर पछताए और आशीष दे। (योएल 2:14)

योएल इस बात से आश्वस्त था कि जब तक उसकी भविष्यवाणी संपूर्ण रूप से पूरी नहीं हो जाती, तब तक लोगों के लिए परमेश्वर की क्षमा को खोजना अच्छा है क्योंकि कोई नहीं जान सकता कि परमेश्वर हस्तक्षेप करने वाली उस ऐतिहासिक संभावना के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देगा।

पुराने नियम के विश्वासियों के विषय में ये “क्या जाने?” प्रतिक्रियाएं हमें क्या सिखाती हैं? पुराने नियम के विश्वासियों ने सोचा नहीं था भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों में उनके भविष्य बंद थे। इसकी अपेक्षा उन्होंने सदैव यह सोचा था कि भविष्यवाणियों के पूरे होने के तरीकों पर हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाओं- विशेषकर प्रार्थना की संभावना- का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ना संभव था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

द्विरूपीय प्रतिक्रिया

"क्या जाने?" प्रतिक्रिया पुराने नियम की भविष्यवाणी के लक्ष्य की एक विशाल धारणा की ओर हमारी अगुवाई करता है। भविष्यवक्ताओं ने अपनी भविष्यवाणियों की द्विरूपीय प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा एवं आशा की थी। एक ओर, भविष्यवक्ता जानते थे कि यह सुनिश्चित करने का एक रास्ता है कि बताया गया दण्ड बढ़ेगा नहीं, तो भी आएगा अवश्य। यह रास्ता भविष्यवाणी की चेतावनी को नजरअंदाज करना और परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते रहना है। इसके साथ-साथ जब भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की कि परमेश्वर ने अपने लोगों के विरूद्ध वाचाई दण्ड भेजने का निश्चय कर लिया था, तो वे चाहते थे कि लोग इस आशा के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ें कि दण्ड उनसे हट जाए। पश्चाताप और यहोवा में भरोसा ही परमेश्वर के दण्ड को हटाने की एकमात्र आशा है। दूसरी ओर, जब भविष्यवक्ताओं ने आशीष के वचन कहे तो वे अपने पाठकों से प्रतिक्रियाओं को भी उभारना चाहते थे। वे इस बात से आश्वस्त थे कि परमेश्वर के विरूद्ध घोर विद्रोह पूर्व में कही गई आशीषों को हटाकर उसके स्थान पर दण्ड को ले आएगा, परन्तु निरंतर विश्वासयोग्य जीवन प्रतिज्ञा की गई आशीषों को निश्चित रूप से लेकर आएगा।

सरल रूप में कहें तो भविष्यवक्ताओं ने दण्ड और आशीषों की भविष्यवाणियां अपने श्रोताओं को अपने कार्यों के द्वारा दण्ड को दूर करने और परमेश्वर की आशीषों को बढ़ाने के लिए उत्साहित करने हेतु दीं। अतः भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों का लक्ष्य प्रमुख रूप से पूर्वानुमान नहीं बल्कि परमेश्वर के लोगों को यहोवा की सेवा में सक्रिय करना था।

उपसंहार

भविष्यवाणियों के उद्देश्य पर आधारित इस अध्याय में हमने चार विषयों को देखा है। पहला, हमने इतिहास पर ईश्वरीय सर्वोच्चता को देखा, दूसरा, भविष्यवाणियों और मानवीय संभावनाओं को देखा, तीसरा, हमने भविष्यवाणियों की निश्चितता को देखा, और फिर अंत में भविष्यवाणियों के लक्ष्यों को देखा। इस अध्याय में जिन धारणाओं को हमने देखा है, वे पुराने नियम की भविष्यवाणी को समझने के लिए बहुत ही आवश्यक हैं। पुराने नियम के भविष्यवक्ता पूर्व में इतिहास के बारे में बात करने का प्रयास नहीं कर रहे थे जिससे कि लोग बस यह जान लें कि भविष्य में क्या होने वाला है। बल्कि वे लोगों को परमेश्वर की दया को खोजने के लिए सक्रिय कर रहे थे ताकि दण्ड को हटा सकें और परमेश्वर की आशीषों को पा सकें। जैसे-जैसे हम पुराने नियम की भविष्यवाणी को पढ़ते हैं, तो हमें भी परमेश्वर की आशीषों को पाने और उसके दण्ड को हटाने के प्रति सक्रिय हो जाना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।